समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 2019–20 पृष्ठः– 4 अंक :– 47 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

जो भारत को पितृभूमि मानता है, वह हिन्दू है – डॉ. किशन कछवाहा

यह कथन अपने आप में कितना सार्थक है कि जब सारा विश्व गाढ़ निद्रा का सुख ले रहा था, उस समय भारत वर्ष अपनी सम्पूर्ण कलाओं के कौशल्य के माध्यम से उच्चतम सीमायें छू रहा था। विद्यमान मंदिर और उनके पुरावशेष आज भी तत्कालीन जनजीवन और सांस्कृतिक विरासत की प्रगतिशीलता से अवगत करा रहे हैं। अनेकानेक आपदाओं को झेलने के बावजूद वे हमारे पूजास्थल तत्कालीन स्थापत्य का सहजता के साथ दिग्दर्शन करा देते हैं। इनके माध्यम से ही भारतीय संस्कृति को अब तक संरक्षित रखा जा सका है। इस भारतीय संस्कृति के अद्यतन जीवंत रहने का कारण भी यही है कि उसमें व्यक्ति समाज, राष्ट्र और प्रकृति के साथ–साथ लोक और परलोक के चिन्तन का भी समावेश है। आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। मंदिर–पूजा स्थलों ने भारत की एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। स्वामी विवेकानन्द द्वारा कहा गया एक वाक्यांश स्मरण में आता है। उन्होंने कहा था–तुम्हारी जाति के जीवन तथा जीवित रहने का कारण मंदिर हैं–ये जीते जागते धर्म के स्वरूप हैं। धर्म का आचरण करते हुए तुम्हारे पूर्वजों ने जीवन जिया है। मंदिरों का विध्वंश करने वालों के साथ संघर्ष किया है और मंदिरों की रक्षा करते हुये अपने प्राणों को भी न्यौछावर किया है। तुम्हारे पूर्वज शांत नहीं बैठे, उन्हीं मंदिरों का पुनर्निर्माण किया था। गुजरात के सोमनाथ मंदिर को आततायी –विधर्मियों ने अनेक बार तोड़ा परन्तु बार–बार पुनर्निर्माण होता रहा। आज शान के साथ भगवान सोमनाथ का मंदिर खड़ा है। ''यही हिन्दू जाति के जीवन का आधार है। अपने जीवन के आधार को खोकर, अपनी अस्मिता को खोकर कोई भी जाति जीवित नहीं रह सकती। धूर्त आक्रमणकारी हिन्दू जाति को नष्ट कर सकने में असफल रहे। तलवार के जोर पर धर्मान्तरण का कुचक्र भी ज्यादा दिनों तक सफल नहीं हो सका। आतंकवाद भी उन्हीं आतताईयों के वंशजों का एक कुप्रयास है।

आज कतिपय सरकारें भी सेकुलेरिटी और तथा कथित धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हिन्दू धर्म के पैसे से अन्यान्य धर्मावलम्बियों के कल्याण के बहाने हिन्दू विरोधी कृत्यों में संलग्न हैं। केरल में ऐसी समस्या बहुतायत से देखने में आती है, यहां वामपंथी सरकार अपने लोगों को उपकृत कर रही है। इस हेतु कतिपय अधिनियम भी पूर्ववर्ती सरकारों द्वारा अल्पसंख्यकों को उपकृत करने के लिये बना लिये हैं।

मानवता का सर्वाधिक घृणित चेहरा मतान्तरण के रूप में भारतवर्ष ने मुगलकाल में देखा। इसके बाद दो सौ साल के ईसाईयों के शासनकाल में हिन्दू समाज को विभिन्न उपायों द्वारा तहस–नहस करने के प्रयास हुये। इस प्रकार गत एक हजार वर्षों में हिन्दू समाज ने अकल्पनीय बाधायें एवं खून–खराबा झेला है। इसके बावजूद मुसलमान अपनी ताकत के बल पर और ईसाई अपने पैसे के बल पर हिन्दू समाज को भृष्ट नहीं कर पाये। मंदिरों के प्रभाव और अटूट धन भंडार देखकर ईस्ट इंडिया कम्पनी भी अपने प्रभाव में लेने का भरपूर कोशिश करती रही।

आजादी मिलने के सात शतक बाद भी विधर्मी सत्ताधारी अपने कुचक्रों से बाज नहीं आ पा रहा है। देश की सत्ता पर सर्वाधिक समय पर सत्ता पर रहने वाली कांग्रेस पार्टी भी सेकुलेरिटी के मकरजाल में इतनी उलझ चुकी है कि वह अपनी इस दुविधा से बाहर नहीं निकल सकी कि दो हजार साल पहले अस्तित्व में आया ईसाईयत और 1400 साल पहले अस्तित्व में आये इस्लाम के पहले भी भारत का सनातन धर्म अस्तित्व में था। इस द्विविधा के बाहर न निकल पाने के कारण भारतीय संस्कृति पर विभिन्न छोटे–छोटे कारणों को लेकर योजनाबद्ध तरीके से भारत की सांस्कृतिक अस्मिता पर हमले किये जा रहे हैं। ये तत्व नहीं चाहते कि विश्व में कहीं भी हिन्दू संस्कृति का प्रभाव बढ़े। वामपंथी और सेकुलरिस्ट इस बात को बिल्कुल ही पसन्द नहीं करते। इन सेकुलरों का वीभत्सरूप हिन्दू विरोध, राष्ट्र विरोध से लेकर समाज पर लगातार आघात के प्रयासों तक परिलक्षित होता है।

वास्तव में हिन्दू या हिन्दुत्व के लिये सबसे गहरा और संघात्मक संकट कांग्रेस द्वारा हिन्दुत्व तथा हिन्दुत्व विरोधी अभियान है, जिसके कारण भारतवर्ष और भारतीयता की पहचान पर भी प्रश्न चिन्ह खड़ा है? पाकिस्तान और बंग्लादेश जो कभी भारत के अभिन्न अङ्ग थे, मुस्लिम राष्ट्र बन चुके हैं, इस स्थिति में 'हिन्दुत्व' भारतवर्ष को एक देश के रूप में बचाये रखने का एकमात्र सुविधाजनक मार्ग है। भारत इस्लामी मुल्क नहीं है। लेकिन तथाकथित धर्मनिरपेक्षता अर्ध इस्लामिकता का दूसरा अध्याय लिख रही है। हिन्दू संस्कृति का जो राजनीतिकरण हुआ है, उसके लिये हम सब जिम्मेवार हैं। अपना बहुधर्मी देश है। वह इस 'धर्म' से प्राचीनकाल से परिचालित रहा है। यह धर्म एक तरह से व्यष्टि और समष्टि के नैतिक–अनैतिक कर्तव्य बोध का पैमाना था।

'हिन्दू' शब्द की व्यापकता को सतही मानसिकता के कारण ठीक से समझा ही नहीं गया। 'जो इस सिन्धु नदी से लेकर सागर पर्यन्त विस्तृत भारतभूमि को अपनी पितृभूमि मानता है, वह हिन्दू है।'

कांग्रेस ने अपने शासनकाल के दौरान सनातन धर्मावलम्बियों को अलग–थलग किया था। देशवासियों को सेकुलर बनाने की अपनी सुनियोजित कार्यप्रणाली पर काम किया। जबकि भारतीय संस्कृति के संदर्भ में हिन्दू धर्म की महत्ता स्वयं सिद्ध रही है। वास्तव में हिन्दू धर्म की मान्यतायें, इसके रीतिरिवाज, इसके पर्व–त्यौहार इसके आचार–विचार और ज्ञान–विज्ञान इन सबसे मिलकर ही भारत देश की एक विशेष जीवन पद्धति का उद्भव और विकास हुआ है। यहां तक कि यहां के प्रमुख व्यवसाय कृषि और अर्थ व्यवस्था में भी हिन्दू धर्म के तात्विक संदर्भ मौजूद है, जो उसे सदा जीवन्त बनाये रखते हैं।

हिन्दू धर्म और संस्कृति की अवधारणा संक्रान्ति की है, क्रान्ति की नहीं। परिवर्तन जो सहज आता है, वह संक्रान्ति बनता है, स्थायी होता है। जो परिवर्तन एकदम आता है, वह प्रलय लाता है। हिन्दू समाज की सबसे बड़ी समस्या है–'आत्मविस्मृति' हम भूल गये कि भारत क्या है? दुनिया के अन्यान्य देशों की तरह भारत का जीवन नहीं है, भारत एक यात्रा है–सनातन यात्रा। यह हमको समझना है कि भारत्त क्या है? पश्चिम के शिक्षण के फलस्वरूप जो वातावरण निर्मित हुआ, उसमें हम भूल गये कि भारत क्या है?

क्या इस तर्क को माना जा सकता है कि भारतीयों को इतिहास लिखना नहीं आता था? क्या इसमें तनिक भी सत्यता है कि भारत का कोई लिखित इतिहास नहीं है? अंग्रेजों और

शेष भाग पृष्ठ क्र.4 पर

संत रविदास और इस्लाम

आज जय भीम, जय भीम का नारा लगाने वाले कुछ राजनेता कठपुतली के समान प्रयोग कर रहे हैं। यह मानसिक गुलामी का लक्षण है। दलित–मुस्लिम गठजोड़ के रूप में बहकाना भी इसी कड़ी का भाग है। दलित समाज में संत रविदास का नाम प्रमुख समाज सुधारकों के रूप में स्मरण किया जाता है। आप रविदासिया कुल से सम्बंधित माने जाते थे।

चर्ममारी राजवंश का उल्लेख महाभारत जैसे प्राचीन भारतीय वांग्मय में मिलता है। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. विजय सोनकर शास्त्री ने इस विषय पर गहन शोध कर चर्मचारी राजवंश के इतिहास पर पुस्तक लिखी है। इसी तरह चमार शब्द से मिलते–जुलते शब्द चंवर वंश के क्षत्रियों के बारे में कर्नन टॉड ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान का इतिहास' में लिखा है। चंवर राजवंश का शासन पश्चिमी भारत पर रहा है। इसकी शाखाएं मेवाड़ के प्रतापी सम्राट महाराज बाप्पा रावल के वंश से मिलती है। संत रविदास जी महाराज लम्बे समय तक चित्तौड़ के दुर्ग में महाराणा सांगा के गुरू के रूप में रहे हैं। संत रविदास जी महाराज के महान, प्रभावी व्यक्तित्व के कारण बड़ी संख्या में लोग इनके शिष्य बने। आज भी इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में रविदासी पाए जाते हैं।

उस काल का मुस्लिम सुल्तान सिकंदर लोधी अन्य किसी भी सामान्य मुस्लिम शासक की तरह भारत के हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की उधेड़बुन में लगा रहता था। इन सभी आक्रमणकारियों की दृष्टि गाजी उपाधि पर रहती थी। सुल्तान सिकंदर लोधी ने संत रविदास जी महाराज मुसलमान बनाने की जुगत में अपने मुल्लाओं को लगाया। जनश्रुति है कि वो मुल्ला संत रविदास जी महाराज से प्रभावित हो कर स्वयं उनके शिष्य बन गए और एक तो रामदास नाम रख कर हिन्दू हो गया। सिकंदर लोधी अपने षड़यंत्र की यह दुर्गति होने पर चिढ़ गया और उसने संत रविदास जी को बंदी बना लिया और उनके अनुयायियों को हिन्दुओं में सदैव से निषिद्ध खाल उतारने, चमड़ा कमाने, जूते बनाने के काम में लगाया। इसी दुष्ट ने चंवर वंश के क्षत्रियों को अपमानित करने के लिये नाम बिगाड़ कर चमार सम्बोधित किया। चमार शब्द का पहला प्रयोग यहीं से शुरू हुआ। संत रविदास जी महाराज की ये पंक्तियाँ सिकंदर लोधी के अत्याचार का वर्णन करती है।

''वेद धर्म सबसे बड़ा, अनुपम सच्चा ज्ञान फिर मैं क्यों छोड़ूँ इसे पढ़ लूँ झूट कुरान वेद धर्म छोड़ूँ नहीं कोशिश करो हजार तिल–तिल काटो चाही गोदो अंग कटार''

चंवर वंश के क्षत्रिय संत रविदास जी के बंदी बनाने का समाचार मिलने पर दिल्ली पर चढ़ दौड़े और दिल्ली की नाकाबंदी कर ली। विवश हो कर सुल्तान सिकंदर लोधी को संत रविदास जी को छोड़ना पड़ा। इस रपट का जिक्र इतिहास की पुस्तकों में नहीं है मगर संत रविदास जी के ग्रंथ रविदास रामायण की यह पंक्तियाँ सत्य उद्घाटित करती हैं बादशाह ने वचन उचार

''मत प्यारा इसलाम हमारा''।

खंडन करै उसे रविदासा।।

उसे करै प्राण कौ नाशा।।

जब तक राम नाम रट लावे। दाना पानी यह नहीं पावे।।

जब इसलाम धर्म स्वीकारे। मुख से कलमा आप उचारै।।

पढ़े नमाज जभी चितलाई। दाना पानी तब यह पाई।।

जैसे उस काल में इस्लामिक शासक हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिए हर सम्भव प्रयास करते रहते थे वैसे ही आज भी कर रहे हैं। उस काल में दलितों के प्रेरणास्त्रोत संत रविदास सरीखे महान चिंतक थे। जिन्हें अपने प्राण न्यौछावर रना स्वीकार था मगर वेदों को त्याग कर कुरान पढ़ना स्वीकार नहीं था। मगर इसे ठीक विपरीत आज के दलित राजनेता अपने तुच्छ लाभ के लिए अपने पूर्वजों की संस्कृति और तपस्या की अनदेखी कर रहे हैं। दलित समाज के कुछ राजनेता जिनका काम ही समाज के छोटे–छोटे खंड बांट कर अपनी दुकान चलाना है अपने हित के लिए हिन्दू समाज के टुकड़े–टुकड़े करने का प्रयास कर रहे हैं। आईए डॉ. अम्बेडकर की सुने जिन्होंने अनेक प्रलोभन के बाद भी इस्लाम और ईसाइयत को स्वीकार करना स्वीकार नहीं किया। हर व्यक्ति इस लेख को शेयर अवश्य करे जिससे हिन्दू समाज को तोड़ने वालों का षड़यंत्र विफल हो जाए।

पाकिस्तान में होता है हिन्दुओं का उत्पीड़नः अमेरिका

वाशिंगटन(एजेंसी)। अमेरिका ने माना है कि पाकिस्तान में हिन्दुओं का उत्पीड़न होता है। धार्मिक रूप से अल्पसंख्यक होने के चलते बहुसंख्यक वर्ग के हिंसक अतिवादी उन्हें निशाना बनाते हैं। अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोंपियो ने यह बात 27 देशों के अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता गठबंधन बनाने का एलान करते हुए कही है। बुधवार को बना यह गठबंधन दुनिया के देशों में धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा करने और उसे मजबूत करने का कार्य करेगा।

विदेश मंत्री पोंपियो ने कहा, यह गठबंधन प्रत्येक मनुष्य की धार्मिक स्वतंत्रता के लिए हर सम्भव तरीके से कार्य करेगा। गठबंधन में शामिल अन्य प्रमुख देशों में ऑस्ट्रलिया, ब्राजील, ब्रिटेन, इजरायल, यूक्रेन, नीदरलैंड्स और ग्रीस हैं। पोंपियो ने कहा, प्रत्येक व्यक्ति अपनी धार्मिक मान्यता के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करे, यह गठबंधन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसके लिए गठबंधन ऐसे प्रयास करेगा जो कभी नहीं हुए हैं। इस समय दुनिया के दस में से आठ लोग अपनी धार्मिक मान्यता के मुताबिक जीवन व्यतीत नहीं कर पा रहे हैं। अमेरिकी विदेश मंत्री ने कहा, हम आतंकियो और हिंसक अतिवादियों निंदा करते हैं जो धार्मिक अल्पसंख्यकी को निशाना बनाते हैं। चाहे वे इराक में येजिदी समुदाय के लोग हों, पाक में हिन्दू हों, नाइजीरिया में ईसाई हों या म्यांमार में मुस्लिम हों। हम ईशनिंदा कानून व स्वधर्म त्याग कानून की भर्त्सना करते हैं। ये कानून मनुष्य की आतंक के साथ अपराध करते हैं। हम चीन की कम्युनिष्ट पार्टी के सभी धार्मिक गतिविधियों दमन वाले कृत्यों की भी भर्त्सना करते हैं। हम जानते हैं कि चीनी दबाव के बावजूद कुछ देश इस गठबंधन में शामिल हुए हैं उनका शुक्रिया अदा करते हैं।

सीएए का यही आधार–पाकिस्तान में हिन्दू, सिखों और अन्य धार्मिक अल्पसंख्यकों को उत्पीड़न से बचाने के लिए ही भारत में हाल में नागरिकता संशोधन कानून(सीएए) बना है। कानून में पाकिस्तान के साथ ही बांग्लादेश और अफगानिस्तान को भी शामिल किया गया है। नए कानून में धार्मिक रूप से उत्पीड़ित विदेशी लोगों को छह साल के निवास के बाद ही भारत की नागरिकता देने का प्रावधान किया है।

कसाईबाड़ों व होटलों में बदल दिए थे पाक के मंदिर, गुरूद्वारे

जमीन का जो हिस्सा सदियों से भारतभूमि का अभिन्न और गौरवशाली अंग था, उसे 1947 में भारत विभाजन के समय धर्म के आधार पर बांट दिया गया था। जो हिस्सा अलग हुआ, उसका नाम हुआ पाकिस्तान। किन्तु धर्म को आधार बनाकर अलग हुए इस देश में बाद में अन्य धर्मों के पूजा–उपासना स्थलों के साथ जो क्रूरता बरती गई, उनकी जो दुर्गति की गई, वह इतिहास में काले अक्षरों में कैद है। पाक बनने के बाद वहां सरकार के समर्थन से मंदिरों, गुरूद्वारों को कसाईबाड़ों और मांस बेचने वाली होटलों में बदल दिया गया था। इस बात का जिक्र बंटवारे के समय पाकिस्तान गए और बाद में वहां से भागकर फिर भारत आए जोगेंद्रनाथ मंडल ने एक पत्र में किया था।

विभाजन के समय बाबासाहब आंबेडकर के मना करने के बाद भी जोगेन्द्रनाथ मंडल मुस्लिम लीग का साथ देते हुए पाकिस्तान जा बसे थे। वहां वे प्रथम कानून मंत्री बने। किन्तु कुछ ही वर्षों में वहां मुस्लिमों द्वारा दलितों और उनके साथ किए जाने वाले दुर्व्यवहार, धार्मिक हिंसा से वे इतने परेशान हुए कि भारत लौट आए। उन्होंने पाकिस्तान के कानून मंत्री रहते हुए पाक के तत्कालीन प्रधानमंत्री लियाकत अली खान को लिखा था–'पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में हालात बहुत खराब हैं? मुझे मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं, बंगालियों व सिखों की बच्चियों के साथ दुष्कर्म किए जाने की खबरें लगातार मिल रही हैं। मुस्लिमों ने हिन्दू वकीलों, डॉक्टरों, व्यापारियों और दुकानदारों का बहिष्कार कर दिया है। इससे ये लोग पलायन को मजबूर हो रहे हैं। हिन्दुओं द्वारा मजबूरी में बेचे जा रहे सामान की मुसलमान आधी कीमत भी नहीं दे रहे हैं। विभाजन के समय पश्चिमी पंजाब में पिछड़ी जाति के एक लाख लोग थे। उनमें से बड़ी संख्या को बलपूर्वक इस्लाम कबूल करवा दिया गया है। मुझे एक सूची मिली है, जिसके अनुसार कई मंदिरों और गुरूद्वारों को कसाईखानों और मांस बेचने वाली होटलों में तब्दील कर दिया गया। आप कुछ करें, वरना यह अनर्थ और बढ़ जाएगा।' मंडल के इस पत्र को पढ़कर लियाकत अली कोई कार्रवाई करने के बजाय कुटिलता से मुस्करा दिये थे, मानो यह सब उनकी सहमति से ही हो रहा था।

अल्पसंख्यकों को लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संज्ञान

ग्लोबल ह्यूमन राइट्स डिफेंस ने 22 सितम्बर, 2018 को संयुक्त राष्ट्र संघ के जिनेवा स्थित मुख्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। जिसका उद्देश्य पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न पर अन्तर्राष्ट्रीय जागरूकता पैदा करना था। सैकड़ों शान्तिपूर्ण लोगों ने इस प्रदर्शन में हिस्सा लिया। उन्होंने जोर दिया कि संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ और दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं को पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर ध्यान देने की तत्काल आवश्यकता है।

25 जुलाई, 2018 को कैलिफोर्निया से डेमोक्रेटिक सदस्य, एडम शिफ ने कहा, ''मैं पाकिस्तान के सिंध प्रान्त में मानवाधिकारों के हनन पर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। सालों से, सिंध में रानतीतिक कार्यकर्ताओं और धार्मिक अल्पसंख्यकों को प्रतिदिन जबरन ध ार्मपरिवर्तन, सुरक्षा बलों द्वारा अपहरण और हत्या के खतरों का सामना करना पड़ता है।''

अमेरिकी सांसद तुलसी गबार्ड 21 अप्रैल, 2016 को सदन में कहा, ''दुर्भाग्य से बांग्लादेश में नास्तिक, धर्म निरपेक्षतावादियों, हिन्दू, बौद्ध और अन्य अल्पसंख्यकों के खिलाफ भेदभाव और घातक हिंसक घटनाएं हो चुकी हैं।''

विश्व के सबसे असहिष्णु देश

इस्लामिक देशों में अल्पसंख्यकों की जमीनों पर जबरन कब्जा, हमला, अपहरण, जबरन धर्मपरिवर्तन, मंदिर तोड़ने, बलात्कार और हत्या एवं नरसंहार जैसी घटनाएँ सामने आती रहती हैं। इसका कारण सरकारों का अलोकतांत्रिक रवैया और न्यायिक प्रक्रिया का कमजोर होना है।

'द टेलीग्राफिक' के अनुसार अफगानिस्तान विश्व का सबसे असहिष्णु देश है। (29 दिसम्बर, 2016)। अखबार ने इस सूची में पाकिस्तान को अठारहवें स्थान पर रखा है। बांग्लादेश में भी गैर–मुसलमानों की जीवन दूभर हो चुका है।

नेहरू–लियाकत समझौता

देश के बंटवारे के बाद पलायन की समस्या की शुरूआत उस समय हुई जब दिसम्बर 1949 में भारत पाकिस्तान के आर्थिक संबंध टूट गए। दस लाख लोगों ने दोनों देशों की सीमा पार की। इसके बाद आठ अप्रैल 1950 को नेहरू–लियाकत समझौता हुआ। तय हुआ कि दोनों देश अपने यहां के अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा करेंगे। इतना ही नही, यह भी कहा गया है कि जो भागकर आए हैं उन्हें लौटकर अपनी सम्पत्ति बेचने का अधिकार होगा, अपहृत औरतों को लौटाना होगा औरजबरन कराया गया धर्म परिवर्तन अमान्य किया जाएगा, लेकिन कुछ ही महीने बाद पाकिस्तान से दस लाख हिन्दू भागकर भारत आ गए।

भारत ने इसका एक तरफा पालन किया, देश में फलता–फूलता मुस्लिम समुदाय इसका गवाह है। दूसरी ओर पाक में समूचा सत्ता प्रतिष्ठान ही अल्पसंख्यक विरोध पर उतर आया। पाक में आज 1947 की तुलना में हिन्दुओं की संख्या 10 प्रतिशत भी नहीं बची। शेष हिन्दू या तो बलात् मतान्तरित कर लिये, मार दिये गये अथवा पलायन को विवश हुए। यही स्थिति ईसाई, सिख और बौद्ध समुदायों की भी हुई। बांग्लादेश निर्माण के बाद उम्मीद जगी थी कि कम से कम वहाँ पर हिन्दुओं पर होने वाले दमन पर लगाम लगेगी लेकिन जल्दी ही उसने भी अपने आप को इस्लामिक देश घोषित कर दिया और एक बार फिर दमन चक्र चालू हो गया।

भूल का देर से हुआ प्रायश्चित

पाकिस्तान और बांग्लादेश में इस्लामी कट्टरवाद को मिली छूट से त्रस्त हिन्दू जब जान बचाकर धर्मनिरपेक्ष भारत में आते तो यहां कभी उपेक्षा मिलती और कभी तिरस्कार। एक तरफ हत्या, दुष्कर्म, अपहरण और जबरन धर्मांतरण की तलवार लटकती तो दूसरी तरफ भारत में जटिल कानूनी प्रक्रिया या कैंपों में नजरबंदी का खौफ सताता। इन देशों में उत्पीड़न झेल रहे हिन्दू, बौद्ध या सिखों ने बंटवारे की मांग नहीं की थी। बंटवारा उन पर थोपा गया था। 1947 से पाकिस्तान और फिर 1971 के बाद बांग्लादेश में चल रहा जाति संहार बंटवारे की त्रासदी का ही विस्तृत संताप है। नागरिकता विधेयक इस भूल का देर से हुआ प्रायश्चित है। लेकिन आज जब 70 साल पुरानी गलतियों को सुधारने की पहल तेज हुई है तो उसे फिर हिन्दू मुस्लिम की बहस में उलझाने की कोशिशें भी तेज हुई है। नागरिकता संशोधन विधेयक विशिष्ट परिस्थितियों से उत्पन्न मानवीय संकट का प्रत्युत्तर है। यदि इतनी बड़ी विभीषिका से प्रभावित लोगों के लिए विशिष्ट भेद के अंतर्गत कानून बनाने का तर्कसंगत आधार नहीं माना जाएगा

शेष भाग पृष्ठ क्र.4 पर

शेष भाग पृष्ठ क्र.1 का

तत्कालीन उनके पिट्ठू इतिहासकारों द्वारा महाभारत सहित अन्यान्य तथ्यों को नकारना उनकी मजबूरी थी। यदि वे ऐसा न करते तो उन्हें भारत के वैदिक धर्म और श्रेष्ठतम धर्म संस्कृति को स्वीकार करना पड़ता और ऐसा करने पर उन्हें यह भी मानना पड़ता कि सभी मानव आर्यसंतति हैं। उनका ही समग्र भूमंडल पर आधिपत्य रहा है। ऐसा स्वीकार कर लेने की स्थिति में ईसाईयत के पैर जमाना भारत में मुश्किल हो जाता है।

जिस भारत देश में तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला जैसे विश्वविख्यात सैकड़ों विश्वविद्यालय रहे हों, जहां देश–विदेशों से 85 से अधिक विषयों का अध्ययन करने छात्र आते रहे हों, उन हिन्दुओं का अपना इतिहास न हो। और डकैतों की भांति भारत आने वाले अंग्रेज इतिहास के विशेषज्ञ बन गये। हिन्दुओं और हिन्दू राष्ट्र भारत के गौरवशाली अतीत को ढँककर ईसाईयत का प्रचार करने में सफल हुये। इस सफलता ने उन्हें अपने शासन को मजबूती देने में मदद की।

ईशा के जन्म से 305 वर्ष पूर्व मेगस्थनीज, विक्रम की प्रथम सदी से आठवीं सदी तक आये 100 से अधिक चीनी विद्वान बौद्ध भिक्षु, प्रख्यात इत्सिंग, फाहियान व्हेनसांग आदि, सातवीं सदी के अरबयात्री, सुलेमान सौदागर, अल्मा सदी तथा 1010 से 1020 तक अबूरिहाँ अलवरूनी जैसे गैर–हिन्दू इतिहास कार महाभारत का वर्णन अपने इतिहास में कर चुके थे। अकबर के दरवारी इतिहासकार अबुलफजल ने अपने ग्रंथ 'आईने अकबरी'' में पांडव राजाओं की वंशावली सहित महाभारत का वर्णन किया है। मगर 1757 के बाद भारत की भूमि को अपवित्र करने वाले अंग्रेजों ने, ईसाई मतावलम्बियों ने झूठा बताने का पाप–छल किया है। वह भी जानबूझकर। इसी राह पर 1947 में मिली आजादी के बाद सत्ता पर बैठने वाले अंग्रेजों के अनुयायी भारतीयों ने भी वही किया। जबकि सत्य यह था कि हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिये ही बलिदान दिये गये थे।

लव–जिहाद

लव–जिहाद के तहत मुस्लिम लड़कों द्वारा गैर–मुस्लिम लड़कियों को प्रेम के झांसे में फंसाकर उनका कन्वर्जन (इस्लाम में लाये जाने) की घटनायें तेजी से बढ़ती जा रही हैं। चर्च के प्रवक्ता भी अब इस विषय पर खुलकर बोलने लगे हैं। इससे केरल राज्य में ही शांति और सद्भाव को खतरा पैदा हो गया है। उनका आरोप है कि ईसाई लड़कियों को सुनियोजित तरीके से लव–जिहाद का शिकार बनाया जा रहा है, पर वोट बैंक की लालची सरकार वेसुध है। इस प्रयास में ईसाई लड़कियों को निशाना बनाकर उनकी हत्यायें भी की गईं हें। ऐसी घटनायें भी सामने आ चुकी हैं जिनमें युवतियों को लालच देकर उनके साथ बलात्कार किया गया और अत्याचार करते हुये कन्वर्जन के लिये मजबूर किया गया।

वास्तव में 'लव–जिहाद' शब्द सन् 2009 में अस्तित्व में आया था, जब चार ईसाई लड़कियों के माता–पिता ने अपनी बच्चियों को मजहबी उन्मादियों द्वारा जबरन इस्लाम में कन्वर्ट किये जाने के बाद केरल उच्च न्यायालय में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर की गयी थी।

कॉंग्रेस और मार्क्सवादी कम्युनिष्ट पार्टी जैसे राज्य के प्रमुख राजनीतिक दल इस मुद्दे से ही मुंह फेर लेते हैं, क्योंकि वे राजनीतिक दृष्टि से मुस्लिम समुदाय के वोट बैंक की तरफ ललचाई नजरों से देखते रहे हैं।

शेष भाग पृष्ठ क्र.3 का

तो फिर किसे माना जाएगा? इसलिए पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में धार्मिक उत्पीड़न अत्याचार के शिकार हुए अल्पसंख्यक हिन्दू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी, ईसाई भारतीय विस्थापितों को नागरिकता मिलेगी।

सैनिक स्कूल में पहली बार छात्राओं की दाखिला

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने सैनिक विद्यालयों में सत्र 2021–22 के लिए लड़कियों के चरणबद्ध तरीके से प्रवेश के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। यह फैसला मंत्रालय ने दो साल पहले मिजोरम के सैनिक विद्यालय छिंगछिप में लड़कियों के प्रवेश की प्रायोगिक परियोजना की सफलता को देखते हुए लिया गया है। रक्षामंत्री ने संबंधित अधिकारियों को इस फैसले को निर्बाध तरीके से लागू करने के लिए सैनिक विद्यालयों में पर्याप्त महिला कर्मचारियों और आवश्यक आधारभूत संरचना की उपलब्धता सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। यह फैसला सरकार के समग्रता, लैंगिक समानता, सशस्त्र बलों में महिला भागीदारी को बढ़ाने के उद्देश्य की पूर्ति और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चलाए जा रहे 'बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं' अभियान को मजबूत करने के लक्ष्य के अनुरूप है।

जिहादी संगठन इस्लामिक स्टेट का देश में फैलता मकड़जाल

राष्ट्रीय जांच एजेंसी से संबंधित आतंकवाद विरोधी संगठन और स्पेशल टास्क फोर्स की बैठक में राष्ट्रीय जांच एजेंसी के इंस्पेक्टर जनरल आलोक मित्तल ने बताया कि अब तक देश में आईएसआईएस से संबंधित 127 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। इनमें से सबसे अधिक लोग तमिलनाडु में पकड़े गए जिनकी संख्या 33 है। उत्तरप्रदेश में 19, केरल में 17 और तेलंगाना में 14 लोग पकड़े गए हैं। इस बैठक में गृह राज्यमंत्री जी किशन रेड्डी, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोवाल और नागालैण्ड के राज्यपाल आर.एन. रवि भी मौजूद थे। डोवाल ने कहा कि राष्ट्रीय जांच एजेंसी को आतंकवाद के उन्मूलन के लिए अपनी जांच को बेहतर बनाना होगा। उन्होंने यह स्वीकार किया कि राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने कश्मीर मं आतंकवाद को रोकने के लिए शानदार काम किया है। राष्ट्रीय जाच एजेंसी के आलोक मित्तल ने कहा कि गिरफ्तार किए गए लोगों ने यह स्वीकार किया है कि वे जाकिर नाइक के भाषणों को सुना करते थे और उसके प्रेरणा से ही वे आतंकवादी गतिविधियों में शामिल हुए हैं। मित्तल ने कहा कि इसके बाद हमने जाकिर नाइक के संगठन इस्लामिक रिसर्च फाउंडेशन के खिलाफ रपट दर्ज करवाई। इसी तरह से जम्मू–कश्मीर में भी कुछ पृथकतावादी तत्वों को भारत स्थित पाकिस्तान उच्चायोग द्वारा आर्थिक सहायता दी जाती थी। उन्होंने यह दावा किया कि जमात–उल–मुजाहिदीन बांग्लादेश ने बिहार, महाराष्ट्र, केरल और कर्नाटक मं अपने पैर पसारे हैं और इससे संबंधित 125 संदिग्ध व्यक्तियों का पता लगाया गया है

सूचना

कृपया आप अपना सुझाव महाकोशल संदेश के ई–मेल व्हाट्सअप नं. 9713223539 पर भेजें।

— सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा -
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com